एम. वेंकटेश्वर और गुर्रमकोंडा नीरजा सहित 7 लेखकों को अंतरराष्ट्रीय हिंदी भास्कर, 2 को हिंदी रत्नाकर तथा रामेश्वर सिंह को संस्कृति-सेतु सम्मान प्रदत्त

डॉ. ऋषभदेव शर्मा

आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी के गगन विहार, हैदराबाद स्थित सभाकक्ष में संपन्न सम्मान समारोह में मास्को स्थित रूसीभारतीय मैत्री संघ 'दिशा' के संस्थापक डॉ. रामेश्वर सिंह को 'साहित्य मंथन संस्कृति-सेतु सम्मान' प्रदान करते हुए तेलुगु विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ.एन. गोपि. साथ में (बाएँ से) डॉ.अनिल कुमार सिंह, डॉ. एम. वेंकटेश्वर, डॉ.ऋषभदेव शर्मा, डॉ. पूर्णिमा शर्मा, डॉ.आर. जयचंद्रन, डॉ.गुर्रमकोंडा नीरजा, डॉ.बाबू जोसफ एवं डॉ.प्रदीप कुमार सिंह. हैदराबाद, 20 अक्टूबर, 2016 (मीडिया विज्ञप्ति). "हिंदी केवल भारत की ही नहीं विश्व की बेहद शक्तिशाली भाषा है जो बहुत बड़े जन-समुदाय को तरह-तरह की भिन्नताओं के बावजूद जोड़ने का काम करती है. मैंने देश-विदेश की अपनी साहित्यिक यात्राओं में कभी भी अकेलापन अनुभव नहीं किया है क्योंकि हिंदी मेरे साथ हमेशा रहती है. आज जब विश्वपटल पर भारत और रूस के मैत्री संबंध नई दिशा की ओर बढ़ रहे हैं, ऐसे समय भारतीय-रूसी मैत्री संघ 'दिशा' के संस्थापक डॉ. रामेश्वर सिंह का हैदराबाद में सम्मान तथा उनकी संस्था की ओर से भारत के कुछ हिंदी सेवियों का सम्मान हिंदी के माध्यम से परस्पर मैत्री को मजबूत बनाने की खातिर एक सराहनीय कदम है." ये विचार अग्रणी तेलुगु साहित्यकार प्रो.एन. गोपि ने रूसी - भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' (मास्को), साहित्यिक - सांस्कृतिक शोध संस्था (मुंबई) तथा 'साहित्य मंथन' (हैदराबाद) के संयुक्त तत्वावधान में आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी के सभाकक्ष में संपन्न 'स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह' की अध्यक्षता करते हुए प्रकट किए. इस अवसर पर मास्को से आए डॉ.रामेश्वर सिंह को श्रीमती लाड़ो देवी शास्त्री की पावन स्मृति में प्रवर्तित "साहित्य मंथन संस्कृति-सेतु सम्मान : 2016" प्रदान किया गया. अपने कृतज्ञता भाषण में डॉ.रामेश्वर सिंह ने कहा कि कोई भी भाषा अपने बोलने वालों के दम पर विकसित होती है और विश्व भर में हिंदी अपने प्रयोक्ताओं की बड़ी संख्या तथा अपनी सर्वसमावेशी प्रकृति के कारण निरंतर विकसित हो रही है, अतः आने वाले समय में सांस्कृतिक से लेकर कूटनैतिक संबंधों तक के लिए हिंदी को बड़ी भूमिका अदा करनी है. 'दिशा' और 'शोध संस्था' की ओर से डॉ.आर. जयचंद्रन (कोचिन) और डॉ.मुकेश डी.पटेल (गुजरात) को "हिंदी रत्नाकर अंतरराष्ट्रीय सम्मान" से तथा डॉ.बाबू जोसेफ (कोट्टायम), डॉ.एम. वेंकटेश्वर (हैदराबाद), डॉ.अनिल सिंह (मुंबई), डॉ.गुर्रमकोंडा नीरजा (हैदराबाद), डॉ.वंदना पी. पावसकर (मुंबई), डॉ.सुरेंद्र नारायण यादव (कटिहार) और डॉ.कांतिलाल चोटलिया (गुजरात) को "हिंदी भास्कर अंतरराष्ट्रीय सम्मान" से अलंकृत किया गया. पुरस्कृत साहित्यकारों ने हिंदी भाषा के प्रति अपने पूर्ण समर्पण का संकल्प जताया. कार्यक्रम के प्रथम चरण में आगंतुक और स्थानीय साहित्यकारों के परस्पर परिचय के साथ 'चाय पर चर्चा' का अनौपचारिक दौर चला तथा दूसरे चरण में सम्मान समारोह संपन्न हुआ. आरंभ में स्वस्तिदीप प्रज्वलित किया गया तथा कवयित्री ज्योति नारायण ने वंदना प्रस्तुत की. साहित्यिक-सांस्कृतिक शोध संस्था के सचिव डॉ.प्रदीप कुमार सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया और विश्वमैत्री के लिए हिंदी की संभावित भूमिका पर विचार प्रकट किए. अपनी सक्रिय भागीदारी और उपस्थिति से चर्चा-परिचर्चा को जीवंत बनाने में डॉ.बी. सत्यनारायण, डॉ.अहिल्या मिश्र, डॉ.रोहिताश्व, डॉ.करण सिंह ऊटवाल, वुल्ली कृष्णा राव, डॉ.बी. बालाजी, डॉ.मंजु शर्मा, डॉ.बनवारी लाल मीणा, प्रभा कुमारी, मो. आसिफ अली, प्रवीण प्रणव, शशि राय, भंवर लाल उपाध्याय, जी.परमेश्वर, पवित्रा अग्रवाल, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, डॉ.राजेश कुमार, संपत देवी मुरारका, डॉ.मोनिका शर्मा, वर्षा, डॉ.सुनीला सूद, डॉ.राजकुमारी सिंह, टी. भाषिणी, संतोष विजय, अशोक तिवारी, आलोक राज, शरद राज, श्रीधर सक्सेना, श्रीनिवास सावरीकर, डॉ.रियाज़ अंसारी, मदन सिंह चारण और डॉ.पूर्णिमा शर्मा आदि ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया.

हमारे प्रायोजक

КОРАЛ-МЕД
CORAL-MED
RUSEURO PHARM
uqeя idea a 2 z services

रूसी-भारतीय मैत्री पर हमें गर्व है

НОВЫЕ ГОРИЗОНТЫ

नई दिशा

रूसी भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' द्वारा
जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र,
भारतीय दूतावास, मास्को के सौजन्य
से प्रकाशित और प्रसारित
मुख्य सम्पादक और प्रकाशक डॉ. रामेश्वर सिंह

सम्पादक: डॉ. शुभ नारायण सिंह
तकनीकी सम्पादक: नादेज़्दा सिंह, दिनीस

सहयोगी :
ल्युदमीला ख़ख़लोवा, इन्दिरा गज़िएवा,
गुज़ेल स्रिल्कोवा, डॉ. मीनू शर्मा,
येकतिरीना पानिना,
अनस्तसीया गूरिया, अल्पना दास,
नौशाद बानो, रति कोसिनवा, रोली जैन

संचालन एवं सम्पादन पूर्णतया
अव्यावसायिक व अवैतनिक

कार्यालय : info@disha.su, www.disha.su
FB: DISHA(INDO-RUSSIAN friendship society)
VK: http://vk.com/nco_disha
सम्पर्क दूरभाष : +7 985 341 38 59
लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादक की
सहमति ज़रूरी नहीं

निःशुल्क वितरण के लिए

Отпечатано в ООО «ИДЕЯ»
+7 926 222 0 888
www.ideaonline.ru

НОВЫЕ ГОРИЗОНТЫ
DISHA नई दिशा
मैत्री, एकता, बन्धुत्व
ИНДИЯ • РОССИЯ ДИПЛОМАТИЧЕСКИЕ ОТНОШЕНИЯ 1947-2017
त्रैमासिक पत्रिका
जनवरी, 2017 1(5) मास्को, रूस
जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र, भारतीय दूतावास, मास्को के सौजन्य से

विश्व हिन्दी सम्मेलन और विश्व हिन्दी दिवस
अर्थात
विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर हिन्दी

डॉ. एस. एन. सिंह

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और बाजारीकरण के दौर में हिन्दी भारत की चारदीवारी से निकल कर विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है और जिस तरह से पूरी दुनिया में हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है, वह दिन दूर नहीं कि हिन्दी विश्व भाषा का दर्ज़ा हासिल कर लेगी। इस हेतु सम्पूर्ण दुनिया में सरकारी, गैरसरकारी स्तर पर विभिन्न तरह के सार्थक प्रयास किया जा रहे हैं। सभी तरह के प्रयासों में सबसे महत्त्वपूर्ण व प्रभावी प्रयास है – विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन और उसके अंतर्गत विश्व हिन्दी दिवस मनाना। आइए, आज मैं आपको विश्व विश्व हिन्दी सम्मेलनों और विश्व हिन्दी दिवस से सम्बंधित कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराता हूँ।

प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। विश्व में हिन्दी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनो की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था इसीलिए इस दिन को *विश्व हिन्दी दिवस* के रूप में मनाया जाता है।

इतिहास

भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी 2006 को प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप मनाये जाने की घोषणा की थी। उसके बाद से भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में 10 जनवरी 2006 को पहली बार विश्व हिन्दी दिवस मनाया था।

विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्व भर से हिन्दी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिन्दी प्रेमी जुटते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की राष्ट्रभाषा के प्रति जागरुकता पैदा करने, समय-समय पर हिन्दी की विकास यात्रा का आकलन करने, लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिन्दी साहित्य के प्रति सरोकारों को और दृढ़ करने, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने तथा हिन्दी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण व महत्त्वपूर्ण रिश्तों को और अधिक गहराई व मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से १९७५ में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शृंखला शुरू हुई। इस बारे में पूर्व प्रधानमन्त्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने पहल की थी।तब से अब तक कुल दस विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। सभी सम्मेलनों का मुख्य उद्देश्य होता है – हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में स्थापित करवाना और इसको संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्ज़ा दिलाना।

पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन १० जनवरी से १४ जनवरी १९७५ तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। सम्मेलन से सम्बन्धित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी डी जत्ती थे। पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था - **वसुधैव कुटुम्बकम**। सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस के प्रधानमन्त्री श्री शिवसागर रामगुलाम, जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आये एक प्रतिनिधिमण्डल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था। इस सम्मेलन में ३० देशों के कुल १२२ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे-

१- संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाये।

२- वर्धा में विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना हो।

३- विश्व हिन्दी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिये अत्यन्त विचारपूर्वक एक योजना बनायी जाये।

विश्व हिन्दी सम्मेलन शृंखलाएँ

क्रम	तिथि	नगर	देश
१	१०-१४ जनवरी १९७५	नागपुर	भारत
२	२८-३० अगस्त १९७६	पोर्ट लुई	मारीशस
३	२८-३० अक्टूबर १९८३	नई दिल्ली	भारत
४	२-४ दिसम्बर १९९३	पोर्ट लुई	मारीशस
५	४-८ अप्रैल १९९६	त्रिनिडाड-टोबेगो	त्रिनिदाद और टोबैगो
६	१४-१८ सितम्बर १९९९	लंदन	संयुक्त राजशाही
७	५-९ जून २००३	पारामरिबो	सूरीनाम
८	१३-१५ जुलाई २००७	न्यूयार्क	संयुक्त राज्य अमेरिका
९	२२-२४ सितम्बर २०१२	जोहांसबर्ग	दक्षिण अफ्रीका
१०	१०-१२ सितम्बर २०१५	भोपाल	भारत

दूसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस में हुआ। मॉरीसस की राजधानी पोर्ट लुई में २८ अगस्त से ३० अगस्त १९७६ तक चले विश्व इस सम्मेलन के आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ॰ सर शिवसागर रामगुलाम थे। सम्मेलन में भारत से तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मन्त्री डॉ॰ कर्ण सिंह के नेतृत्व में २३ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया। भारत के अतिरिक्त सम्मेलन में १७ देशों के १८१ प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में २८ अक्टूबर से ३० अक्टूबर १९८३ तक किया गया। सम्मेलन के लिये बनी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डॉ॰ बलराम जाखड़ थे। इसमें मॉरीशस से आये प्रतिनिधिमण्डल ने भी हिस्सा लिया जिसके नेता थे श्री हरीश बुधू। सम्मेलन के आयोजन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने प्रमुख भूमिका निभायी। सम्मेलन में कुल ६,५६६ प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें विदेशों से आये २६० प्रतिनिधि भी शामिल थे। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवियत्री सुश्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं।

चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन २ दिसम्बर से ४ दिसम्बर १९९३ तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया। १७ साल बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। इस बार के आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मन्त्री श्री मुक्तेश्वर चुनी ने सम्हाला था। उन्हें राष्ट्रीय आयोजन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इसमें भारत से गये प्रतिनिधिमण्डल के नेता थे श्री मधुकर राव चौधरी। भारत के तत्कालीन गृह राज्यमन्त्री श्री रामलाल राही प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता थे। सम्मेलन में मॉरीशस के अतिरिक्त लगभग २०० विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

पाँचवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ त्रिनिदाद एवं टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में। तिथियाँ थीं - ४ अप्रैल से ८ अप्रैल १९९६ और आयोजक संस्था थी त्रिनीदाद की हिन्दी निधि। सम्मेलन के प्रमुख संयोजक थे हिन्दी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम। भारत की ओर से इस सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधिमण्डल के नेता अरुणाचल प्रदेश

रूसी भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' के बारे में

रूस और भारत के नागरिकों के बीच मैत्री व आत्मीयता को बढ़ावा देने और दो देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को अधिक सक्रिय बनाने के लिए वर्ष 2010 के शरदकाल में रूसी भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' की स्थापना की गई थी। 'दिशा' की स्थापना का उद्देश्य दो देशों के नागरिकों के बीच वैज्ञानिक, आर्थिक, व्यापारिक, सामाजिक, अकादेमिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के विकास को गति देना है।

इसके लिए 'दिशा' संगठन विभिन्न सम्मेलनों, मेलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, गोष्ठियों, परिचर्चाओं, खेल-प्रतियोगिताओं, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, गोलमेज़ बैठकों, फ़िल्म महोत्सवों, पर्वों, समारोहों आदि का आयोजन करता है और 'नई दिशा' के नाम से एक पत्रिका भी निकाल रहा है। अपने इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए 'दिशा' संगठन अन्य रूसी व भारतीय संगठनों, सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों, अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध संस्थानों के साथ सहयोग करता है।

पिछले पाँच वर्षों से 'दिशा' संगठन रूस में हर वर्ष नववर्ष समारोह और 'इण्डिया डे' यानी भारत-दिवस समारोह का आयोजन कर रहा है, जिनमें रूस और भारत के नागरिक बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। ख़ासकर दिशा के सदस्य वे सँयुक्त परिवार हैं, जो रूसी और भारतीय नागरिकों ने मिलकर बनाए हैं। इस तरह से 'दिशा संगठन' रूस में रहने वाले भारतीय प्रवासियों का संगठन बना हुआ है। 'दिशा' रूस में रहने वाले भारतीय और रूसी-भारतीय परिवारों की किसी भी तरह की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता है तथा इन परिवारों के बच्चों को भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक परम्पराओं से परिचित कराता है। इधर रूस में हिन्दी के प्रचार- प्रसार के लिए 'दिशा' संगठन सक्रिय हुआ है।

इसके लिए 'दिशा' ने 'जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र, भारतीय दूतावास, मास्को के साथ मिलकर सबसे पहले तो 'हिन्दी मित्र सम्मान' स्थापित किया है, जो हर साल किसी एक ऐसे रूसी नागरिक को दिया जाता है, जिन्होंने रूस में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए बड़ा काम किया है। पिछले वर्ष यह सम्मान मास्को विश्वविद्यालय में हिन्दी की आचार्य डॉ॰ ल्युदमीला ख़ख़लोवा को दिया गया था। इस वर्ष 'हिन्दी मित्र सम्मान-2016' येकतिरीना पानिना को देने का फ़ैसला किया गया है।

प्रतिवर्ष हिन्दी पढ़ने वाले रूसी छात्रों के बीच 'हिन्दी पाठ प्रतियोगिता' और 'हिन्दी भाषण प्रतियोगिता' कराई जाती है और इन प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को पुरस्कृत किया जाता है। इस साल 19 मार्च, 2016 को मास्को विश्वविद्यालय के अफ़्रीका व एशिया अध्ययन संस्थान में रूसी छात्रों के बीच हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें मास्को विश्वविद्यालय के अलावा, मास्को राजकीय अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध विश्वविद्यालय और रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय के कुल 33 छात्रों ने हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार पाने वाली पाचों छात्राएँ मास्को विश्वविद्यालय की थीं।

27 मई 2016 को 'दिशा' ने रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय में भारत-रूस हिन्दी अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया है। भारत से रूस की यात्रा पर आए 21 हिन्दी विद्वानों और हिन्दी के रूसी विद्वानों व आचार्यों की इस संगोष्ठी में 'भूमण्डलीकरण में भारत और रूस का सांस्कृतिक योगदान' विषय पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

रूस में हिन्दी में 'नई दिशा' के नाम से एक नई त्रैमासिक पत्रिका भी शुरू की गई है तथा हाल ही में 'दिशा' के संचालकों ने यह तय किया है कि 'दिशा' भारतीय और रूसी-भारतीय सँयुक्त परिवारों की कानूनी तौर पर मदद करने की भी कोशिश करेगा।

रामेश्वर सिंह, अध्यक्ष,
रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा'।
(+7-985-3413859)
info@disha.su

'रूस और भारतीय

रूस और भारत दोस्त पुराने,
दोनों हैं सच्चे साथी।
सदा देते साथ एक दूजे का
छोडते नहीं कुछ बाकी।
रूस में भारत की संस्कृति,
सदा सराही जाती।

माता सम हिन्दी भाषा,
यहाँ सभी को है भाती।
दोस्ती निभाने की हर संभव,
कोशिश करते सब अपनी - अपनी।
चाँद यहाँ भारतीय दूतावास,
और सांस्कृतिक केंद्र है चाँदनी।
गायन, संगीत और नृत्य,
यहाँ सिखाया जाता।
योग और हिन्दी का ज्ञान भी
चहुं ओर फैलाया जाता।
भारतीय संस्कृति के हम अध्येता,
मधुर मिलन इसका यहाँ होता
कोई भी द्वेष – विद्वेष नहीं यहाँ,
पूर्ण प्रेम और समर्पण होता।

- डॉ मीनू शर्मा (हिन्दी अध्यापिका
जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र,
भारतीय राजदूतावास मॉस्को रूस)

ПОЗИЦИОННЫЕ ПРЕДИКАТЫ «СТОЯТЬ», «СИДЕТЬ», «ЛЕЖАТЬ» В ЯЗЫКЕ ХИНДИ.

Л.В. Хохлова, К. Галиченко

Прототипические значения предикатов *стоять, сидеть, лежать* связаны с тремя основными положениями человека в пространстве: вертикальным, горизонтальным и промежуточным, которое Е. Рахилина условно называет «сложенным». Те же глаголы используются для описания положения животных, которые уподобляются положению человека, однако одна и та же поза животного может получать разную интерпретацию в различных языках. Например, коровы на лугу в русском *лежат*, а в хинди *сидят*. *Лежат* только мертвые животные. Предикат *сидеть* по отношению к мелким животным обозначает в хинди, как и в русском и многих других языках, только неподвижное положение в пространстве, ср. *птица сидит на ветке*.

В языках мира существует две основные тенденции описания местонахождений объектов: универсальная и классифицирующая. В языках с преобладающей универсальной тенденцией местонахождение различных объектов описывает один и тот же глагол, обычно глагол *быть*, в то время как в языках с классифицирующей тенденцией существует несколько предикатов, выбор которых зависит от топологического класса объекта.

Хинди, как, например, финский, относится к «универсальным», русский, немецкий, шведский – к «классифицирующим». На начальных этапах обучения хинди приходится «подавлять» интерференцию, результатом которй становятся неправильные в хинди буквальные переводы с русского предложений типа *тарелки стоят на столе* или *лежат на полу*, *гвоздь сидит в стене*. Гораздо больше трудностей испытывают носители хинди при изучении русского языка, так как их языковая картина мира не позволяет ответить на вопрос, почему *точка в конце предложения* и *кавалерийский полк в городе стоят*, а *пирог в печи сидит*.

Несмотря на то, что русский обнаруживает свойства классифицирующего, а хинди универсального языка, процессы метафоризации в обоих языках имеют много общего. Ср. совпадающие пути метафоризации в хинди и русском: сидеть > находиться долгое время в одинаковом положении (сидеть в тюрьме); сидеть > быть прикрепленным к одному месту > соответствовать чему-либо (пальто хорошо сидит);

Совпадают также метафоры от глаголов, обозначающих изменение позиции, ср. общие метафорические переносы значений двух антонимичных глаголов: садиться и вставать:

I. садиться > двигаться вниз > приземляться (о самолете); садиться > оседать (о земле); садиться > двигаться вниз > уходить за горизонт (о светилах); садиться > двигаться вниз > прятаться (о преступниках); садиться > терять функциональность (р. голос, х. горло)

II. вставать > подниматься (о светилах); вставать > появляться (поднялся ветер)

Многие метафоры в хинди не имеют буквальных русских аналогов, однако обнаруживают похожее движение мысли, например, сидеть на стуле > соответствовать своей должности; садиться > двигаться вниз о глазах (умирать); садиться > разоряться (о банках, заводах и т.д.); садиться о душе – расстраиваться; вставать > появляться (о мыслях); вставать > исчезать (например, об обычае сати).

В хинди в отличие от русского глаголы изменения позиции легко грамматикализуются, выступая образующими интенсивных глаголов. *Садиться* как образующий интенсивного глагола обозначает внезапность и нежелательность действия, *вставать* имплицирует инцептивное значение, а также значение неожиданного изменения ситуации.

Цитируемые работы:

***1.* Галиченко, К.** *Глаголы позиции в языке хинди. Курсовая работа, 2012.*

***2.* Лакофф, Дж., Джонсон, М.** *Метафоры, которыми мы живем.// Теория метафоры. М., Прогресс, 1990: 396-402.*

***3.* Рахилина, Е.В.** *Когнитивный анализ предметных имен. М., Русские словари, 2000: 284 – 302.*

4. *The Linguistics of Sitting, Standing and Lying,* **Newman, J.,** *ed. John Benjamins Publishing Company, Amsterdam/Philadelphia, 2002.*

के राज्यपाल श्री **माता प्रसाद** थे। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था- प्रवासी भारतीय और हिन्दी। जिन अन्य विषयों पर इसमें ध्यान केन्द्रित किया गया, वे थे - हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, कैरेबियाई द्वीपों में हिन्दी की स्थिति एवं कप्यूटर युग में हिन्दी की उपादेयता। सम्मेलन में भारत से १७ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के २५७ प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए।

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन लन्दन में १४ सितम्बर से १८ सितम्बर १९९९ तक आयोजित किया गया। यू०के० हिन्दी समिति, गीतांजलि बहुभाषी समुदाय और बर्मिंघम भारतीय भाषा संगम, यॉर्क ने मिलजुल कर इसके लिये राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष थे डॉ॰ कृष्ण कुमार और संयोजक डॉ॰ पद्मेश गुप्त। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था - हिन्दी और भावी पीढ़ी। सम्मेलन में विदेश राज्यमन्त्री श्रीमती **वसुंधरा राजे** के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया। प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता थे प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ॰ **विद्यानिवास मिश्र**। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व इसलिए है क्योंकि यह हिन्दी को राजभाषा बनाये जाने के ५०वें वर्ष में आयोजित किया गया। यही वर्ष सन्त **कबीर** की छठी जन्मशती का भी था। सम्मेलन में २१ देशों के ७०० प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ सुदूर सूरीनाम की राजधानी **पारामारिबो** में। तिथियाँ थीं - ५ जून से ९ जून २००३। इक्कीसवीं सदी में आयोजित यह पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन था। सम्मेलन के आयोजक थे श्री जानकीप्रसाद सिंह और इसका केन्द्रीय विषय था - विश्व हिन्दी: नई शताब्दी की चुनौतियाँ। सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश राज्य मन्त्री श्री **दिग्विजय सिंह** ने किया। सम्मेलन में भारत से २०० प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें १२ से अधिक देशों के हिन्दी विद्वान व अन्य हिन्दी सेवी सम्मिलित हुए। सम्मेलन का उद्घाटन ५ जून को हुआ था। यह भी एक संयोग ही था कि कुछ दशक पहले इसी दिन सूरीनामी नदी के तट पर भारतवंशियों ने पहला कदम रखा था।

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन १३ जुलाई से १५ जुलाई २००७ तक **संयुक्त राज्य अमेरिका** की राजधानी **न्यू यॉर्क** में हुआ। इस सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था - विश्व मंच पर हिन्दी। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय द्वारा किया गया। न्यूयॉर्क में सम्मेलन के आयोजन से सम्बन्धित व्यवस्था अमेरिका की हिन्दी सेवी संस्थाओं के सहयोग से **भारतीय विद्या भवन** ने की थी। इसके लिए एक विशेष जालस्थल (वेवसाइट) का निर्माण भी किया गया। इसे प्रभासाक्षी.कॉम के समूह सम्पादक **बालेन्दु शर्मा दाधीच** के नेतृत्व वाले प्रकोष्ठ ने विकसित किया है।

नौवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन वर्ष २२ सितम्बर से २४ सितम्बर २०१२ तक, **दक्षिण अफ्रीका** के शहर **जोहांसबर्ग** में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में २२ देशों के ६०० से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें लगभग ३०० भारतीय शामिल हुए। सम्मेलन में तीन दिन चले मंथन के बाद कुल १२ प्रस्ताव पारित किए गए और विरोध के बाद एक संशोधन भी किया गया।

दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा १० सितम्बर से १२ सितम्बर २०१५ तक **भोपाल** में किया गया। इसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री श्री **नरेन्द्र मोदी** ने किया। सम्मेलन का मुख्य विषय "हिंदी जगत : विस्तार एवं संभावनाएं" था। 1983 के बाद लगभग 32 वर्षों के अंतराल पर भारत में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन हुआ। यह सम्मलेन विदेश एवं प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मध्य प्रदेश राज्य सरकार सम्मेलन की स्थानीय आयोजक थी और मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान सम्मेलन के मुख्य संरक्षक थे। भोपाल स्थित माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय सम्मेलन की सहभागी संस्थाएं थीं। इस सम्मेलन के उद्घाटन तथा समापन सत्रों में देश-विदेश से लगभग 5,000 हिन्दी प्रेमी शामिल हुए। इसके अतिरिक्त लगभग 2,000 प्रतिभागियों एवं आधिकारिक मंडल तथा मीडिया के सदस्यों ने भी भाग लिया। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह समापन समारोह में मुख्य अतिथि थे। **इस सम्मेलन में देश और विदेश के हिंदीसेवियों को 'विश्व हिंदी सम्मान' से सम्मानित भी किया गया।**

ग्यारहवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन -10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन सत्र में यह प्रस्ताव पारित हुआ कि 11वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन 2018 में मॉरीशस में आयोजित होगा। विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित प्रस्ताव: -

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए। वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना हो। विश्व हिंदी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए ठोस योजना बनाई जाए।

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन

- मॉरीशस में एक विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना की जाए जो सारे विश्व में हिंदी की गतिविधियों का समन्वय कर सके।
- हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में एक आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान मिले। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जाए।

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन

- अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार की संभावनाओं का पता लगा कर इसके लिए गहन प्रयास किए जाएं।
- हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप को विकसित करने के लिए विश्व हिंदी विद्यापीठ स्थापित करने की योजना को मूर्त रूप दिया जाए।

चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन

- विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थापित किया जाए।
- भारत में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए।
- सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि अपने-अपने देशों की सरकारों से संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास करेंगे।

पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

- विश्व व्यापी भारतवंशी समाज हिंदी को अपनी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करेगा।
- मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत में एक अंतर-सरकारी समिति बनाई जाए।

छठा विश्व हिंदी सम्मेलन

- विश्व भर में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन, शोध, प्रचार-प्रसार और हिंदी सृजन में समन्वय के लिए महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय केंद्र सक्रिय भूमिका निभाए।
- मॉरीशस सरकार अन्य हिंदी-प्रेमी सरकारों से परामर्श कर शीघ्र विश्व हिंदी सचिवालय स्थापित करे।
- हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता दी जाए।

सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

- संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाया जाए।
- विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना हो।
- हिंदी के प्रचार हेतु वेबसाइट की स्थापना और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग हो।
- हिंदी विद्वानों की विश्व-निर्देशिका का प्रकाशन किया जाए।
- विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हो।

आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

- विदेशों में हिंदी शिक्षण और देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से दूसरी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाया जाए।
- विश्व हिंदी सचिवालय के कामकाज को सक्रिय करने एवं उद्देश्य परक बनाने के लिए और हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए विश्व मंच पर हिंदी वेबसाइट बनाई जाए।
- हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के लिए एक सर्वमान्य व सर्वत्र उपलब्ध यूनिकोड को विकसित व सर्वसुलभ बनाया जाए।
- विदेशों में जिन विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है उनका एक डेटाबेस बनाया जाए।

नौवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

- यह सम्मेलन मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत और मॉरीशस की सरकारों द्वारा किए गए अथक प्रयासों एवं समर्थन की सराहना करता है।
- महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय भी हिंदी के प्रचार-प्रसार और उपयुक्त आधुनिक शिक्षण उपकरण विकसित करने में सराहनीय कार्य कर रहा है।
- सम्मेलन केंद्रीय हिंदी संस्थान की भी सराहना करता है कि वह विदेशियों और देश के गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों के बीच हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहा है।

दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

- इस सम्मलेन में १२ विषयों पर विचार प्रस्तुत किया गया।
- भारत की केंद्र सरकार सम्मलेन के परिणामों को अमल में लाने के लिए एक समीक्षा समिति बनाएगी।
- हिन्दी को समयबद्ध रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने का प्रयास क्या जाए।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अगर जब सच्ची लगन और विश्व कल्याण की भावना के साथ कोई कार्य किया जाए तो उस कार्य में सफलता अवश्य मिलती है| यानि विश्व हिन्दी सम्मेलनों के माध्यम से जिस तरह से हिन्दी को जन जन की भाषा और विश्व भाषा बनाने के भागीरथ प्रयास किए जा रहे हैं, उसमें सफलता अवश्य मिलेगी अर्थात हिन्दी विश्व भाषा का दर्ज़ा अवश्य हासिल करेगी और एक न एक दिन संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा भी बनेगी। अंततः मैं कहना चाहूंगा कि ''हिन्दी को १४ सितम्बर से १० जनवरी की ओर बढ़ते देखना एक सुखद अहसास है।''

स्रोत : राजभाषा विभाग, भारत सरकार और विश्व हिन्दी सम्मलेन की वेबसाइट

डॉ. एस. एन. सिंह
हिन्दी अध्यापक
के. वि. सं.

Шахрух Кхана, как будто только эти высокомерные самопиарствующие персоны принимали участие в процветании многонационального (подчёркиваю многонационального!) индийского кинематографа, потому что фильмы в Индии выпускаются не только в Бомбее (теперь Мумбаи) на хинди, но и на других национальных языках в Мадрасе (Ченнаи), Калькутте (Колкате), Хайдерабаде, Бангалоре, Тривандруме (Тхируванантхапурам) и других центрах кинопроизводства.

До развала СССР в течение полустолетия на многочисленных экранах советских кинотеатров и на телеканалах демонстрировались почти 250 индийских фильмов, которые имели неизменный успех у советской аудитории.

Однако впоследствии в результате пренебрежительно-снисходительного отношения к индийскому кинематографу и примитивного низкопоклонства перед Голливудом всё рухнуло. На данный момент любители индийского кино могут увидеть индийские картины только на трёх спутниковых коммерческих телеканалах и в Интернете на пиратском online.

И вдруг (божественное чудо!) в России неожиданно вспомнили о существовании индийского кинематографа, всерьёз заговорили о Возвращении индийского кино в Россию.

В октябре 2016 г. в киноцентре «Октябрь» открылся Первый международный кинорынок KinoPoisk Film Market, организаторами которого стали КиноПоиск и компании Tvindie Film Production и Reflexion Films при поддержке сети кинотеатров нового поколения «Каро».

В программе «Октябрьские скрининги» мне удалось посмотреть два интересных индийских фильма: «Султан» (реж. Али Аббас Звфар» с Салман Кхан в главной роли) и «Выстрел» (реж. Рохит Дхаван, я бы дал этой картине другое прокатное название «Всё вверх дном»).

Затем, в ноябре 2016 г. в кинотеатре «Каро 9 Атриум» выпускник РУДН и New York Film Academy, режиссёр Сарфараз Алам организовал Третий Фестиваль индийского кино (IFF-R) и вручил мне «Памятный диплом за вклад в развитие индийского кино в России».

Впервые мне, члену Гильдии кинокритиков и киноведов Союза кинематографистов Российской Федерации с 1994 года, отдавшему половину своей жизни на изучение и пропаганду индийского кинематографа в России, вручили памятную награду. Хорошо, что упомянули при жизни, а не в некрологе в газете «СК – Новости».

В программе Фестиваля зрители увидели 5 содержательных картин: (1) триллер «Розовый» ("Pink", 2016); (2) драма «Преследование» ("Sadak", 1991); (3) мелодрама «Спектакль» ("Tamasha", 2015); (4) триллер «Раман Рагхав 2.0» ("Raman Raghav 2.0", 2016 и (5) боевик «Клянусь Шивой» ("Shivaay", 2016).

Очередной Фестиваль индийского кино в Москве проходил 17 и 18 ноября в кинотеатре «Люксор Центр» в ТРЦ «Золотой Вавилон». Он был организован JNCC (Культурным центром им. Джавахарлала Неру при посольстве Республики Индия в Российской Федерации). Из 4 фильмов («Джолли – бакалавр юридических наук» и «Королева», представленных на этом Фестивале, два других («Беги, Милкха, беги» и «Видимость») уже показывали в помещении этого Культурного центра.

С 30 ноября по 7 декабря в Москве в кинотеатре сети Синема Парк в ТРЦ «Ривьера» при поддержке компаний Indian Films и All Media и ещё в 20 городах России проходил ещё один Фестиваль индийского кино, так называемый Bollywood Film Festival (BFFR). В программе этого Фестиваля было 8 фильмов. В общей сложности за 8 дней фестиваль посетило более 40 тысяч зрителей.

Из представленных на фестивале 8 фильмов, я увидел только три: (1) мелодраму «Клянусь тобой, любимая» ("Sanam Teri Kasam", 2016); (2) триллер «Фобия» ("Fobia", 2016) и (3) романтическую мелодраму «Безумно

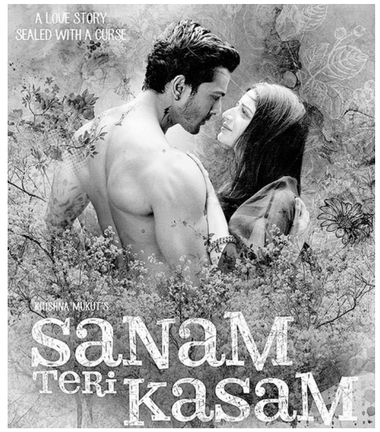

влюблённый» ("Raanjhanaa", 2013). Не хотелось унижаться перед организаторами этого фестиваля и выпрашивать пригласительный билет на просмотр. В списке приглашенных меня не было. Видно, не заслужил такой чести …

В ноябре 2016 г. в Мумбаи в двух залах проходили «Дни российского кино». Открытие состоялось 15 ноября в здании Королевского оперного театра, основной показ проходил в кинозале «Синеполис». За 4 дня фестиваль посетили более семи тысяч зрителей. В скором времени в Индии в прокат выйдет российский фильм «Экипаж».

22 ноября 2016 г. Павел Степанов, генеральный директор кинокомпании «Централ Партнершип» (входит в «Газпром – медиа») и Джьоти Дешпанде, генеральный директор международной кинокомпании «Эрос Интернэшнл», ведущего мирового дистрибьютора индийских фильмов, объявили о стратегическом партнёрстве. «Централ Партнершип» и "Eros International" будут распространять индийские фильмы в России.

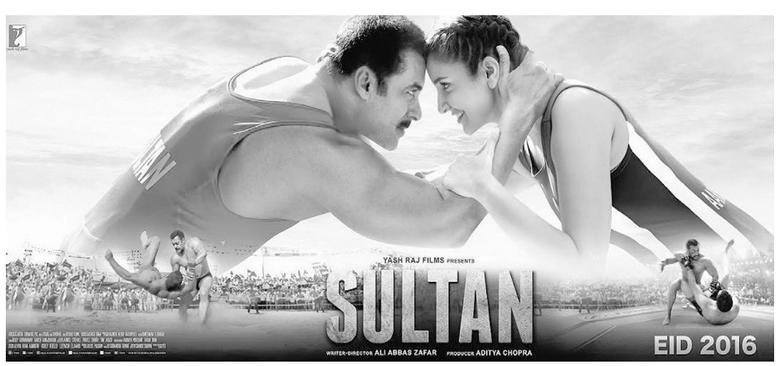

हिन्दी भाषा

हिंदी है अपनी सुंदर,
और प्यारी भाषा।
भर देती है ये तो दिल में,
अरमानों की आशा।
भाषाओं में ये रूपसी,
संस्कृत इसकी माता।
उर्दू इसकी बहन और
अरबी, अँग्रेजी भ्राता।
भारत का गौरव है ये तो,
रिश्तों की परिभाषा।
देवनागरी को पढ़कर,
हो जाती पूरी जिज्ञासा।
भारत माता के माथे की,
ये तो है एक बिंदी।
सुंदर, सौम्य, वैज्ञानिक
अपनी भाषा 'हिन्दी'।
आओ इसका ज्ञान फैला दें,
मिलकर इसका मान बढ़ा दें।
भारत माता के माथे की ये तो है एक
बिंदी,
सुंदर, सौम्य, वैज्ञानिक अपनी भाषा
हिन्दी।

- डॉ मीनू शर्मा (हिन्दी अध्यापिका
जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक
केंद्र भारतीय राजदूतावास मॉस्को)

ПОЛОВОДЬЕ ИНДИЙСКИХ ФИЛЬМОВ В РОССИИ

Юрий Корчагов

Как известно, 16 июня 2009 года в Екатеринбурге состоялся первый саммит БРИК (Бразилия, Россия, Индия и Китай). Затем 12 ноября 2010 г. к БРИК выразила желание присоединиться Южно–Африканская Республика (ЮАР).

В июле 2015 года на VII саммите БРИКС в Уфе премьер – министр Индии Нарендра Моди предложил проводить в странах БРИКС международные кинофестивали с участием фильмов этих стран, а также высказал идею создать собственную кинопремию стран этой группы.

15 и 16 октября 2016 года в индийском штате Гоа состоялся Восьмой саммит БРИКС, в котором принял участие президент России В. В. Путин.

К.Э. Разлогов, президент Гильдии киноведов и кинокритиков, в свою очередь, выступил с предложением создать Евразийскую киноакадемию и учредить «евразийский Оскар» - награду, аналогичную премии Американской киноакадемии, с участием России, Индии и Китая.

Пока неизвестно, кто будет учредителем этого киноакадемии со стороны Индии и Китая. Со стороны России речь идёт о Национальной академии кинематографических искусств и наук.

«Из 24 номинаций американского "Оскара" только одна вручается зарубежным картинам, — сообщил в интервью ТАСС первый заместитель Союза кинематографистов Олег Иванов. - Поэтому нужно создать академию и кинопремию стран БРИКС, где проживают более 40% населения Земли, — "евразийский Оскар".

В настоящее время Союз кинематографистов РФ ведет переговоры с национальными академиями этих стран для учреждения кинопремии. Дата начала вручения премии пока не определена. В любом случае все три страны подтвердили своё намерение участвовать в этом проекте.

С 22 по 29 июня 2017 года в Москве будет проходить очередной 39 Международный кинофестиваль, в рамках которого К. Э. Разлогов, программный директор этого кинофестиваля планирует устроить специальную программу индийских фильмов под названием: «Открытие: Кинематограф регионов Индии». В программе 12 картин на различных национальных языках Индии. Будем ждать и надеяться …

С 2 по 6 сентября 2016 года в Нью-Дели состоялся Первый международный кинофестиваль стран БРИКС – Бразилии, России, Индии, Китая и Южно – Африканской Республики. От каждой страны в конкурсной программе было представлено по 5 фильмов – всего в форуме участвовало 25 картин. С российской стороны в организации этого фестиваля приняла участие Национальная Академия кинематографических искусств и наук совместно с Департаментом кинематографии Министерства культуры России.

Планируется, что международные кинофестивали стран БРИКС станут ежегодными, и их будет проводить страна – председатель объединения.

Следующий Второй кинофестиваль стран БРИКС состоится в 2017 году в Китае, в Чзнду, административном центре провинции Сучуань.

Не хочу в этом материале возвращаться вспять, вспоминать почти пятидесятилетнюю историю тесного сотрудничества между СССР и Индией в области кинематографа. Мало кто знает, что в 1949 году в советский прокат вышел впервые индийский фильм "Дети Земли" (Dharti Ke Lal", 1946, реж. Ходжа Ахмад Аббас).

Сегодня у всех российских журналистов, пишущих об Индии, навязли на зубах имена Митхуна Чакраборти и

तृतीय अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलन, मॉस्को, रूस

26-27 अक्तूबर 2016

अफ्रीका व एशिया अध्ययन संस्थान मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय मॉस्को तथा भारतीय राजदूतावास मॉस्को के जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के सम्मिलित प्रयास से 26-27 अक्तूबर 2016 को मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय,मॉस्को में 'आधुनिक काल में हिन्दी का विकास और उसका भविष्य' विषय पर तृतीय अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलन का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। सम्मेलन के सफल आयोजन में रूस में भारत के राजदूत माननीय श्री पंकज शरण जी का कुशल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने सम्मलेन के सफल आयोजन में एक सक्रिय व प्रेरक भूमिका अदा की और उनके संरक्षण में सम्मलेन सार्थक रूप में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में भारत तथा रूस के अतिरिक्त उज़्बेगिस्तान, अज़रबैजान, कजाखिस्तान, बेलारूस तथा बुल्गारिया से विभिन्न हिन्दी विद्वानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले विद्वानों में महान हिन्दी लेखिका श्रीमति चित्रा मुद्गल, आचार्य यार्ल्गड्डा लक्ष्मीप्रसाद सदस्य केन्द्रीय हिन्दी समिति भारत, श्री आदित्यचौधरी निर्माता ऑनलाइन पोर्टल "भारतकोश", प्रो. ओमकार नाथ कौल तथा रूस से स्वतंत्र हुए देशों से डॉ. उल्फ़त मुहिबोवा ताशकंद राजकीय प्राच्यविद्यासंस्थान, उज़्बेकिस्तान, सईदा मिर्जायेवा अज़रबैजान विश्वविद्यालय अज़रबैजान, दरीगा कोकेएवा अल-फराबी कजाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय कजाखिस्तान, अनस्तासिया बुलंकोवा बेलारूस राजकीय विश्वविद्यालय बेलारूस, इसके अतिरिक्त रूस के सेंट पीटर्स बर्ग से डॉ. आन्ना चेलनोकोवा, डॉ. येकातेरीना

कोस्तिना, दार्या अंतोनेंका, क्सेनिया मरेतिना, यूलिया बेशूक, इरीना सोकोलोवा रबिन्द्रनाथ ठाकुर हिंदी स्कूल, रूस तथा मॉस्को से प्रो. बोरिस ज़खारिन, डॉ. ल्युदमीला खोख़लोवा, डॉ. गुजेलस्चेल्कोवा, डॉ. येकातेरीना पानिना, मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय,मॉस्को डॉ. इन्दिरा गज़ियेवा रूसी मानविकी राजकीय विश्वविद्यालय, रूस श्री योगेन्द्र नागपाल हिंदुस्तानी समाज, दिशा के संस्थापक डॉ. रामेश्वर सिंह, डॉ. शुभ नारायण सिंह, तथा डॉ. मीनू शर्मा हिन्दी अध्यापिका जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र, का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सम्मेलन का उदघाटन 26 अक्तूबर 2016 को सुबह 10 बजे भारतीय राजदूतावास मॉस्को उपप्रमुख श्री जी. बालासुब्रमनियण अफ्रीका व एशिया अध्ययन संस्थान मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय मॉस्को के निदेशक प्रो. ईगोर अबिल गज़िएव, संयुक्त सचिव (हिन्दी) श्री राजेश वैष्णव, प्रो. बोरिस जाखारिन तथा प्रो. ल्यूदमिला खोखलोवा द्वारा दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया। प्रो. ईगोर अबिल गज़ियेव ने अपने भाषण में रूस में हिन्दी के अध्ययन तथा अध्यापन की चर्चा की तथा हिन्दी तथा भारत के प्रति रूसी जनसाधारण के आकर्षण के विषय में बताया। भारतीय राजदूतावास मॉस्को के उपप्रमुख महोदय श्री जी.बालासुब्रमनियन ने अपने भाषण में यूरेशिया में हो रहे हिन्दी के प्रचार–प्रसार की सराहना की तथा मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय के भाषा अध्ययन पर एतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डाला और स्पष्ट किया कि रूस और भारत का संबंध राजनीतिक ही नहीं दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक तथा भाषिक स्तर पर

भी अटूट है। मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय के भाषा शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. बोरिस जखारिन ने रूस में हिन्दी के भविष्य को उज्ज्वल बताया।

उदघाटन समारोह में लगभग दो सौ व्यक्ति उपस्थित थे। रूस के विभिन्न विश्वविद्यालय जैसे रूसी मानविकी राजकीय विश्वविद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का संस्थान तथा मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय के अतिरिक्त, विद्यालय क्रमांक 19 तथा जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के विद्यार्थियों, विभिन्न प्राध्यापकों तथा रूस में सक्रिय हिन्दी तथा भारत से जुड़े अनेक भारतविदों और रूस में बसे अनेक भारतीयों ने इस सम्मेलन में उत्साह पूर्वक भाग लिया। भारतीय राजदूतावास विद्यालय के विद्यार्थियों ने स्वागतगान प्रस्तुत किया तथा पुष्पगुच्छ द्वारा विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी अध्यापिका जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र 'डॉ. मीनू शर्मा 'ने किया। सम्मेलन का मुख्य विषय था "आधुनिक काल में हिन्दी का विकास और उसका भविष्य"। इस को चार सत्रों में विभाजित किया गया था प्रथम सत्र का विषय था - "हिन्दी से व हिन्दी में अनुवाद की समस्याएँ", जिसकी अध्यक्षता प्रो.॰ बोरिस जखारिन ने की। जिस में भारत से आए हुए हिन्दी विद्वान आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद ने तेलुगू और हिन्दी में अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्वानों ने हिन्दी तथा रूसी अनुवाद प्रक्रिया की कठिनाइयों पर प्रकाश डाला। सत्र के अंत में चर्चा तथा विमर्श किया गया जिसमें सभी विद्वानों तथा विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। डॉ. रामेश्वर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित दूसरे सत्र का विषय था – 'हिन्दी भाषा का शिक्षण और व्याकरण,' जिस में प्रो. ओंकार नाथ कौल ने हिन्दी भाषा शिक्षण: स्थिति, सामग्री निर्माण

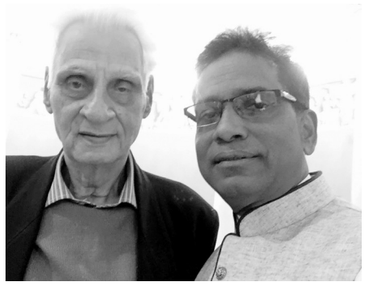

और संभावनाओं पर चर्चा की। 'भारतकोश' के निर्माता श्री आदित्य चौधरी ने हिन्दी शिक्षण में कम्प्यूटर तथा इंटरनेट की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त प्रो.बोरिस जखारिन ने हिन्दी मे भूतकालिक कृदंतों के विशेषणात्मक प्रयोगो पर प्रकाश डाला। शोधपत्र प्रस्तुतीकरण के पश्चात चर्चा एवं विमर्श हुआ।

तीसरा सत्र 27 अक्तूबर को 2016 को प्रो. सेर्गेय सेरेब्रायनी की अध्यक्षता में 'हिन्दी भाषा: भारत तथा रूसी क्षेत्र के विभिन्न देशों के संदर्भ में' आयोजित हुआ। भारत से आई हुई प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्गल ने कहा कि हिन्दी को तकनीकी से जोड़ने की आवश्यकता है। सम्मेलन मे प्राध्यापकों के साथ – साथ विद्यार्थियों द्वारा भी हिन्दी में शोधपत्र प्रस्तुतीकरण को देखकर वे बहुत प्रभावित हुई था उन्होनें कहा कि हिन्दी का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। अंत में सभी प्रतिभागियों ने प्रश्न पूछे तथा अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया। चौथे सत्र का बिषय "हिन्दी शब्द विज्ञान" था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. आन्ना चेल्नोकोवा ने की इस सत्र में भी अनेक विद्वानों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए, डॉ. येकेतेरीना पानिना ने हिन्दी मुहावरों और कहावतों में प्यार अनुराग के अर्थ से संबन्धित शब्दों का विश्लेषण किया। इस सत्र में अनेक विद्यार्थियों ने भी प्रशंसनीय व्याख्यान दिये। अंत में चर्चा विमर्श में भी सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सत्रों की समाप्ति के पश्चात 'समापन समारोह' का आयोजन किया गया। श्री राजेश वैष्णव जी (संयुक्त सचिव हिन्दी संस्कृत) ने समापन सत्र सम्बोधन दिया तथा प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान दिये। मॉस्को में विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ने वाले सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया।

सौन्दर्य विशेषज्ञा- नौशाद बानो

अपनी त्वचा को निखारें कुछ इस तरह

सुंदरता की पहचान साफ और निखरी त्वचा से ही होती है इसीलिए आजकल सौंदर्य उत्पादों का बाजार काफी बढ़ गया है लेकिन बाजार में बिकने वाले महंगे कॉस्मेटिक हमारी त्वचा को स्थाई सुंदरता नहीं दे सकते। त्वचा को स्वस्थ और सुंदर बनाने के लिए आपको प्रकृति का ही सहारा लेना पड़ेगा क्योंकि प्रकृति में ही सुंदरता का खजाना है।

बाजार में मिलने वाले अधिकांश महंगे कॉस्मेटिक उत्पाद में कठोर केमिकल होते हैं जो आपकी त्वचा के लिए नुकसानदेह हो सकते हैं और इसका साइड इफेक्ट भी होता है। वहीं अगर आप घर पर बने प्राकृतिक चीजों से बने सौंदर्य उत्पादों का इस्तेमाल करेंगे तो त्वचा स्वस्थ भी रहेगी और इसमें निखार भी आएगा।

1. नींबू

चेहरे और गर्दन पर ताजा निचोड़ा हुआ नींबू का रस लगाएं। ५मिनट के बाद गुनगुने पानी से धो लें। इसके बाद त्वचा को मॉइश्चराइज करने के लिए अपनी त्वचा पर खीरे के स्लाइस रगड़ें। इसे रोज या हर दूसरे दिन करने से त्वचा में काफी निखार आएगा।

एक दूसरा तरीका यह भी है कि एक आधा नींबू का रस निचोड़े

और उसमें दो बड़े चम्मच शहद मिला कर चेहरे पर लगाएं। १०से १५मिनट के बाद इसे धो लें। काफी फायदा होगा।

स्किन एक्सफोलिएट करने की विधि में भी नींबू काफी फायदेमंद है। एक चम्मच नींबू का रस और दो चम्मच चीनी का मिश्रण तैयार कर लें। इसे अपने चेहरे, गर्दन और हाथों पर लगाएं। ५मिनट के बाद गुनगुने पानी से इसे काफ करें त्वचा में चमक दिखती नजर आएगी। इसे अाप सप्ताह में एक बार लगायें

2. हल्दी

हल्दी त्वचा पर कटे-फटे के निशान और दाग-धब्बे को कम करने में काफी कारगर है। यह एक बेहतर एंटीसेप्टिक क्रीम और त्वचा को चमकाने वाला एजेंट है। इसके अलावा हल्दी स्किन एलर्जी, सूजन और त्वचा संक्रमण समेत कई तरह के स्किन के बीमारियों के लिए रामबाण है। बेजान और नीरस लगने वाली त्वचा में हल्दी जान और चमक लाती है।

एक चम्मच हल्दी और पर्याप्त अनन्नास के रस के साथ हल्दी पाउडर का एक चम्मच मिश्रण तैयार करें। इस पेस्ट को चेहरे और गर्दन पर लगाएं। पेस्ट पूरी तरह से सूख जाने के बाद उसे गुनगुने पानी से धो लें। त्वचा पर धब्बे को मिटाने के लिए यह काफी कारगर उपाय है। इस उपाय को सप्ताह में दोया तीन बार आजमाएं काफी फायदा होगा।

एक छोटे से बर्तन में पानी या दूध के साथ हल्दी पाउडर और बेसन को बराबर मात्रा में मिलाकर एक पेस्ट बनाएं। इस पेस्ट को त्वचा पर समान रुप से लगाएं। सूख जाने पर गुनगुने पानी से धो लें। यह स्किन की स्क्रबिंग का सबसे आसान उपाय है। स्किन टोन में चमक लाने और त्वचा पर हुए निशान हटाने के लिए सप्ताह में एक बार इसे आजमाएं।

3. शहद

बेदाग और निखरी त्वचा के लिए आपको अपनी त्वचा को बराबर मॉइश्चराइज्ड रखना होगा। शहद एक कारगर और बेहतर मॉइश्चराइजर है। अपनी त्वचा पर शहद लगाएं। इसे स्वाभाविक रुप से सूखने दें और फिर गुनगुने पानी से धो लें। शहद और पानी दोनों मिलकर आपकी त्वचा को नरम और कोमल बनाते हैं। इससे त्वचा मॉइश्चराइज भी होती है। दिन में एक बार इसे लगायें

एक दूसरे विकल्प में दो चम्मच दूध और एक चम्मच शहद का मिश्रण तैयार कर लें। फिर इसमें बेसन की बराबर मात्रा मिलाकर फेसमास्क की तरह इस्तेमाल करें। इसे चेहरे पर लगाएं। ३०मिनट के बाद गुनगुने पानी से साफ करें। स्किन में काफी ग्लो आएगा। इसे सप्ताह में एक बार आजमाएं

4. खीरा

खीरा न सिर्फ त्वचा को पोषण देता है बल्कि यह त्वचा में नमी भी बनाए रखती है। इसमें जो कसैला गुण होता है वो त्वचा की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत कर स्किन में चमक लाता है।

एक ताजा खीरे का मोटा स्लाइस काट कर चेहरे पर अच्छी तरह से रगड़ें। रात भर उसे त्वचा पर छोड़ दें और सुबह पानी से धो दें। बिस्तर पर जाने से पहले इसे रोज करें। स्किन तरोताजा रहेगी और चमक भी आएगी।

5. तरबूज

तरबूज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए होता है जो त्वचा को नरम और मुलायम बनाता है और विटामिन सी इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है। इनमे काफी मात्रा में एंटी ऑक्सीडेंट होते हैं जिससे स्किन में जल्दी एजिंग की शिकायत नहीं आती है।

तरबूज को घरेलू फेस पैक की तरह भी उपयोग में लाया जा सकता है। यह सन बर्न, टैनिंग, दाग धब्बे, झाई को खत्म करता है। इसमें 94 प्रतिशत पानी होता है जिसमें विटामिन ए, बी 6 और सी मौजूद हैं। यह त्वचा की नमी को बनाए रखता है।

में बहुत सारे डोक्यूमेंटरी फ़िल्में या वृत्त चलचित्र, टीवी सीरियल और भारत के थ्रिलर प्रचालित हुए हैं। उनमें से ज्यादातर इंडिया टीवी और ज़ी टीवी चैनल में प्रसारित हुए हैं। वकोन्टाक्टे (VKontakte) इंटरनेट पोर्टल और फेसबुक के सोशल नेटवर्क जैसे में भारतीय बॉलीवुड फिल्मों और टीवी सीरियल या कार्टून पौराणिक विषयों से समर्पित फिल्मों को प्रेमीगण खूब पसंद करते हैं इसलिए इन फिल्मों के वितरण व्यवस्था के अनुवाद में बड़ी मांग मिलती है। उन फिल्मों का अनुवाद आम तौर पर विभिन्न स्टूडियो के अनुवादकों से किया जाता है।

हम जानते हैं कि लोग हर दिन टीवी सीरियल या डॉक्यूमेंटरी फ़िल्मों को देखना चाहते हैं। हर सीरियल की मानक लंबाई 20 से 30 मिनट की है। वेब साइट प्रशासकगण या एडमिनिस्ट्रेटर लोग अनुवादकों को इंटरनेट में भी ढूँढते रहते हैं। बड़ी समस्या यह है कि फिल्मों का अनुवाद तेजी से करने की जरूरत है मेहनताना बहुत छोटा होता है। यदि रूसी फिल्मों या हिंदी फिल्मों का अनुवाद सरकारी तरफ़ से ऑर्डर मिल जाता है तो अनुवादक के कार्य का भूगताना काफ़ी बड़ा हो जाता है। खैर, फिल्मों का अनुवाद करने का अनुभव छात्रों का रोज़गार भी मिल जा सकता है। किंतु छात्रों को अनुदित कार्य सिखाने में क्या चाहिए? सब से पहले इन्हें दो भाषाएँ ध्यान से पढ़ने की ज़रूरत है - मातृभाषा व विदेशी भाषा की ज्ञान तथा व्याकरण; द्वितीयतः - कार्य की तमन्ना; त्रितीयः - काम का प्रयास; चौथे - परामर्श और काम करने की क्षमता बहुत ज़रूरी है।

भाषा की ज्ञान आने से छात्र साधारण विदेशी टेक्स्ट अनुवाद कर सकता है। परंतु शब्दावली कठिनाई मिलने से हम अक्सर किसी भी वाक्य अच्छी तरह अनुवाद नहीं करते। अंग्रेज़ी भाषा विभिन्न देशों में प्रचलित हुआ है इसलिए यदि विदेशी शब्द को समानक शब्द नहीं मिल पाया तो अंग्रेज़ी शब्द का उपयोग किया जाता है। टेक्स्ट की विशेषता भी ध्यान में रखना चाहिए। उदाहरणतः रूसी अल्प वृत्त चलचित्र जो अंतरिक्ष विषय-वस्तु से संबंधित हो हिंदी के अनुवाद करने में ज़्यादा रूसी शब्दों या वाक्यांश के बदले में अंग्रेज़ी समानक शब्द ही लगाना पड़ेगा। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में "port-hole, window" मिलते हैं। अंग्रेज़ी शब्द "port-hole, window" हिंदी-रूसी शब्द-कोष में कई अर्थ दिये गये हैं - "पोत गवाक्ष", "झरोखो", "जहाज़ का मोखा", "विमान गवाक्ष" "व्यू पोर्ट"। हम इन सब शब्दों मेंसे सब से कौनसा उपयोगी शब्द चुन लेंगे ? अंतरिक्ष में "Food Warmer" है जिससे खाना बनवाया जाता है। किंतु "फ़ूड वॉर्मेर" चुल्हा जैसे नहीं है - यह खाना गरम करने का विशेष सूटकेस या बोक्स है जिस में खाना गरम स्प्रिंग के नीचे में रखकर बंद करते हैं। जपान में कॉमिक्स का तरह -तरह के क़िस्म होते हैं। जैसे माँगा कॉमिक्स यानी मंगा चित्र भी मिलते हैं जिसको "मंगाका" नाम के लोगों से बनाया जाता है। वैसे शब्द को हिंदी समानक शब्द नहीं मिलेंगे इसलिए हिंदी लिप्यांतरण यानी ट्रांसलिटरेशन में लिखे जाते हैं।

रूसी अल्प वृत्त चलचित्र यानी लघु डोक्यूमेंटरी फ़िल्म में आम तौर पर स्वयंस्फूर्त यानी स्वाभाविक भाषा या बातचीत इस्तेमल की जाती है। जब फ़िल्म में रूसी जुमले सुनाई देते हैं तो हिंदी में सबटाइटल्स भी लगाए जाते हैं। परंतु सबटाइटल्स का आकार 40 व्यंजक से अधिक लगाना कठिन होता है। यदि फ़िल्म देखनेवाले लोग असली नमूने की तुलना में लंबे-से या छोटे-से अनुदित वाक्य सुनाई दें तो समझेंगे कि टेक्स्ट का अनुवाद ठीक तरह से नहीं किया गया। किसी भी टेक्स्ट या फ़िल्म का अनुवाद साहित्यिक भाषा में करना भी ज़रूरी है। रूसी कहावत, मुहावरे व लोकोक्तियाँ हिंदी में अपने समानक रूप में अनुदित किया जा सकता है तथा सरल भाषा का प्रयोग। महाभारत टी.वी. सीरियल में बहुत सारे हिंदू धर्म के शब्द मिलते हैं जैसे - अंग्रेज़ी में वाक्य: "I ask for new strength from Sun God" हिंदी में ऐसे सुनाई देता है कि "गंगा में स्नान करके मैं सूर्यदेव की नयी शक्ति में प्रार्थना करता हूँ"। अनुदित वाक्य में "गंगा में स्नान करके" अनुवाद नहीं दिया गया है क्योंकि रूस में जहाँ इसाई धर्म या मुस्लिम धर्म के लोग रहते हुए हैं नदी में स्नान करने की कोई परंपरा नहीं मिलता है। वैसे भाषा लगातार विकसित होती रहती और बदलती रहती है। अंतरराष्ट्रीय संचार की प्रक्रिया में अनुवाद की कार्य हमेशा रहेगा। छात्रों को जो अनुवादक बनना चाहता है इनको अपने अध्यायन में विदेशी भाषा के कठिन वाक्य या परिभाषा टिप्पणी से लिखना है। सब से पहले इन्हें दो भाषाएँ ध्यान से पढ़ने की ज़रूरत है - मातृभाषा व विदेशी भाषा की ज्ञान तथा व्याकरण; द्वितीयतः - कार्य की तमन्ना; त्रितीयः - काम का प्रयास; चौथे - परामर्श और काम करने की क्षमता बहुत ज़रूरी है।

अंत में मैं कहना चाहती हूँ कि विश्व में अनुवादकों में से अक्सर बहस होता है कि अनुदित टेक्स्ट क्या होता है - मूल पाठ या नयी कहानी?

धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ल्यूदमिला खोखलोवा ने दिया। निदेशक जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र श्री जेयसुन्दर द. ने भी इस सम्मेलन को सुखद अनुभव बताया तथा सभी का धन्यवाद किया। डॉ. अभिषेक वैश्य (काउंसलर एवं अध्यक्ष विज्ञान एवं तकनीकी) ने भी इस सम्मेलन की सफलता पर सब को बधाई दी। संचालन डॉ. शुभ नारायण सिंह ने किया।

प्रतिभागियों ने सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए भारतीय राजदूतावास मॉस्को के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र तथा अफ्रीका व एशिया अध्ययन संस्थान मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय मॉस्को के प्रति आभार व्यक्त किया।

यह सम्मेलन हिन्दी के विकास तथा संवर्धन की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। हिन्दी के इस तृतीय अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलन में विभिन्न देशों से आए हुए विद्वानों, अध्यापकों, शोधार्थियों और छात्रों ने बड़ी प्रवीणता से हिन्दी के शिक्षण, व्याकरण, अनुवाद, तथा सूचना प्रो.द्योगिकी से संबन्धित विभिन्न पक्षों पर महत्वपूर्ण अध्ययनों को प्रस्तुत किया तथा सर्वसंमति से अनेक प्रस्ताव रखे गए –

1 इस सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्रों की समीक्षा तथा अपेक्षित संशोधन व सम्पादन के उपरांत एक संकलन प्रकाशित किया जाए।

2 इस क्षेत्र में कार्य करने वाले हिन्दी से जुडे शोधकर्मियों, विचारकों और लेखकों का एक नेटवर्क विकसित किया जाए जिससे आदान – प्रदान, प्रकाशन और शोध को गति मिले और शोध तथा प्रकाशन के क्षेत्र में हिन्दी की वैश्विक उपस्थिती सुनिश्चित हो।

3 एक नियमित शोध वार्षिकी का प्रकाशन किया जाए। यह भी आवश्यक है कि यूरेशिया में अब तक किए गए शोध कार्यों का संक्षेप में एक ग्रंथ प्रकाशित किया जाए तथा शोध का 'डिजिटल कोश' तैयार किया जाए और यह क्रम निरंतर चलता रहे ताकि शोध कि दृष्टि से हम अद्यतन बने रहें।

4 हिन्दी शिक्षण हेतु सामग्री निर्माण, पाठ्यक्रम निर्माण, सॉफ्टवेयर प्रो. ग्राम, अनुवाद कार्य, संचार तथा फिल्म अध्ययन आदि के क्षेत्र में परस्परिक सहयोग को संयोजित करने हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संसाधन केंद्र की स्थापना की जाए।

5 रूस में विशेषतः मॉस्को और सेंटपीटर्सबर्ग में स्थित अध्ययन केन्द्रों में हिन्दी तथा भारतीय विद्याओं का व्यापक तथा गहन अध्ययनलगभग एक सदी से किया जा रहा है अतः इस कार्य को निरंतरता देने के लिए भारत सरकार की तरफ से विशेष अनुदान दिया जाए। मानक हिन्दी की बोर्ड तथा फॉन्ट के प्रयोग की व्यवस्था हिन्दी के विकास के लिए अत्यंत लाभप्रद होगी।

जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र,भारतीय राजदूतावास

मॉस्को, रूस

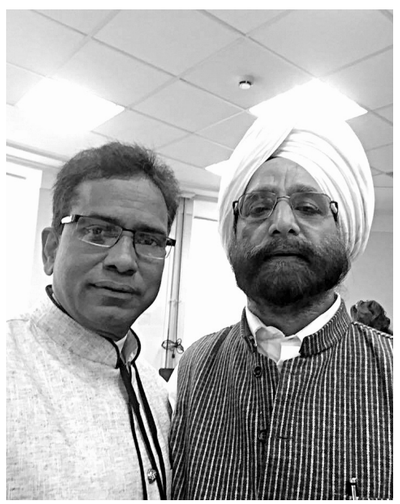

मॉस्को (रूस) में हिन्दी की दशा एवं दिशा

डॉ. शुभ नारायण सिंह
भारतीय राजदूतावास विद्यालय, मॉस्को

भाषा अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक सशक्त माध्यम है। संसार में कुल कितनी भाषाएँ बोली जाती हैं उनकी निश्चित संख्या बता पाना काफी मुश्किल काम है। एक अनुमान के अनुसार विश्व में लगभग 4000 भाषाएँ बोली जाती हैं और भारत में लगभग 122 भाषाएँ एवं 1600 बोलियाँ बोली जाती हैं। इन सबके बीच हिन्दी सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। अध्ययन की दृष्टि से भाषा वैज्ञानिकों ने सभी भाषाओं को परिवारों और उप परिवारों में विभक्त किया है और हिन्दी भारोपीय भाषा परिवार की सदस्य है। जहाँ तक हिन्दी भाषा का प्रश्न है इसका जन्म भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत से हुआ है। हिन्दी अपने वर्तमान स्वरूप में प्राकृत,पालि और अपभ्रंश आदि भाषाओं के कई चरणों से होते हुए विकसित हुई है। हिन्दी भाषा को तुर्की, अरबी, फ़ारसी, पुर्तगाली,अंग्रेज़ी और दक्षिण भारतीय द्रविड़ भाषाओं ने प्रभावित और समृद्ध किया है। भाषा किसी भी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं दार्शनिक पहलुओं को जानने-समझने का प्रभावी माध्यम है। भारत एक बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश है और हिन्दी सबको एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। हिन्दी ने देश की सभी भाषाओं एवं बोलियों से सम्मानपूर्वक आत्मीय संबंध स्थापित किया है।

वर्तमान में हिन्दी भाषा और साहित्य का शिक्षण विश्व-स्तर पर किया जा रहा है। दुनिया के कई प्रमुख देशों जैसे, मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी आदि में प्रमुखता के साथ हिन्दी भाषा का प्रयोग होता है। साथ ही दुनिया के कई देशों के प्रमुख विश्वविद्यालयों (लगभग 175) में हिन्दी भाषा-साहित्य का अध्ययन-अध्यापन कार्य हो रहा है। विदेशों में बसे भारतीय भी विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के द्वारा हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। हिन्दी में बनी भारतीय फिल्में और टीवी धारावाहिक बड़े चाव से पूरी दुनिया में देखे जाते हैं। हिन्दी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन से लेकर आजतक हिन्दी ने अनेक महत्वपूर्ण पड़ाव पार किए है। हिन्दी को भारतीय चिंतन और संस्कृति का वाहक माना गया है। यह हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक कड़ी भी है। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि

हिन्दी का प्रयोग ज्ञान-विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में भी बढ़े ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनता सहित सभी की भागीदारी सुनिश्चित हो सके तथा समस्त हिन्दी भाषियों तक भारतीय उपलब्धियों को पहुँचाया जा सके। हिन्दी भाषा पूर्णतः वैज्ञानिक है तथा इसकी अपनी मानक शब्दावली, व्याकरण और शैली है। हिन्दी का शब्दकोश व्यापक एवं समृद्ध है। कम्प्यूटरीकरण की दृष्टि से भी हिन्दी पूर्णतः वैज्ञानिक है, सीखने में अत्यंत सरल व सहज है।

जहाँ तक रूस में हिन्दी भाषा का सवाल है तो मैं आप सभी को यह बताना चाहूँगा कि वर्तमान में रूस में हिन्दी का भविष्य काफी उज्ज्वल है। इस ऐतिहासिक देश के रूसी साहित्य एवं साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों को काफी प्रभावित किया है,हालांकि भारत की प्राचीन संस्कृति ने उन्हें भी प्रभावित किया है। मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि सिर्फ़ मॉस्को में ही कई संस्थान हैं जहाँ हिन्दी भाषा का शिक्षण व शोध कार्य हो रहा है, यथा मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय, मॉस्को राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय, मॉस्को अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, विद्यालय क्र.19, भारतीय राजदूतावास विद्यालय, मॉस्को आदि| सेंट पीटर्सबर्ग में भी हिन्दी भाषा का शिक्षण कार्य हो रहा है। प्रो बोरिस ज़खारिन, डॉ.ल्यूदमीला खोखलोवा, डॉ. इंदिरा गज़ियेवा, डॉ. येकातेरीना पानिना आदि ऐसे अनेक नाम हैं जो अपने अथक प्रयासों से रूस में हिन्दी को समृद्ध कर रहे हैं। साथ ही भारत-रूस मैत्री संघ 'दिशा', 'हिन्दुस्तानी समाज' आदि भारतीय संस्थाएँ भी अपने स्तर से हिन्दी भाषा एवं संस्कृति के उन्नयन हेतु प्रयासरत हैं।

रूसी समाज में भी हिन्दी के प्रति अपार स्नेह विद्यमान है,यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष सैकड़ों रूसी शिक्षार्थी जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र, मॉस्को में हिन्दी सीखने आते हैं। यह हिन्दी के प्रति उनके लगाव को दर्शाता है। यहाँ के विद्यार्थी अनेक अवसरों पर (विशेषकर हिन्दी दिवस और विश्व हिन्दी दिवस पर) हिन्दी भाषा में वभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रस्तुतियाँ हमारे लिए हर्ष एवं प्रेरणा का विषय है। इसी वर्ष (2016) जून माह में जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा 'हिन्दी सभा' का गठन किया गया| यह एक ऐसा खुला मंच है जहाँ कोई भी

जुड़कर हिन्दी के उत्थान के लिए अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर सकता है। यही नहीं प्रत्येक वर्ष यहाँ से कई विद्यार्थी हिन्दी भाषा के अध्ययन हेतु भारत जाते हैं| इस हेतु भारतीय राजदूतावास, मॉस्को इनके लिए छात्रवृत्ति भी प्रदान करती है। भारत में इनके प्रिय अध्ययन संस्थान जे.एन.यू., दिल्ली एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा हैं। विद्यालय क्र.19, मॉस्को में पहले अनिवार्य रूप से हिन्दी पढ़ाई जाती थी हालांकि अब वहाँ हिन्दी को वैकल्पिक कर दिया गया है, इस पर विचार करने की आवश्यकता है। भारत-रूस मैत्री संघ 'दिशा' अपने त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'नई दिशा' के माध्यम से मॉस्को में हिन्दी को नई दिशा देने के लिए प्रयासरत है। यह संस्था प्रत्येक वर्ष रूसी हिन्दी विद्वानों को 'हिन्दी मित्र सम्मान' पुरस्कार भी प्रदान करती है। इस हेतु प्रकाशक श्री रामेश्वर सिंह और सम्पादक श्री अनिल जनविजय बधाई के पात्र हैं। मॉस्को में हिन्दी के लिए किये जा रहे समन्वित प्रयासों के पीछे प्रेरणास्रोत के रूप में भारतीय राजदूतावास, मॉस्को कार्य कर रही है।

इतना ही नहीं रूस के दूसरे सबसे प्रमुख ऐतिहासिक शहर और वर्तमान में पर्यटन का सबसे बड़ा रूसी केंद्र सेंट पीटर्सबर्ग के सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर विद्यालय में तथा इसके सभी पड़ोसी देशों (पूर्व सोवियत संघ) जैसे, उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, कज़ाखिस्तान, अज़रबैजान, बेलारूस आदि के प्रमुख विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी-शिक्षण कार्य हो रहा है। उन देशों में वहाँ के भारतीय दूतावासों के सहयोग से विद्यालयों में भी हिन्दी की पढ़ाई हो रही है। यहाँ रह रहे प्रवासी भारतीय भी विभिन्न अवसरों पर भारतीय भाषा एवं संस्कृति के उन्नयन हेतु प्रयास करते रहते हैं।

विश्व में तेजी से बदलते आर्थिक तथा वित्तीय परिवेश में आज हिन्दी की अपनी एक अलग पहचान है। दुनिया भर के देशों में रह रहे भारतीय मूल के लाखों प्रवासी संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग कर रहें हैं। इससे हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिल रही है। 10-12सितंबर, 2015 को भोपाल में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन(10वाँ) में विश्व स्तर पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार की चर्चा हुई। ऐसे आयोजन निश्चित रूप से हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका अदा करते हैं। इस कड़ी में अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि भारतीय राजदूतावास, मॉस्को के सांस्कृतिक केंद्र जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र और अफ़्रीका व एशिया अध्ययन संस्थान, मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय, मॉस्को के सम्मिलित प्रयास से 'तृतीय क्षेत्रीय अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन' का आयोजन किया गया| जिसमें भारत, रूस और रूस के पड़ोसी देशों के हिन्दी भाषा एवं साहित्य के मूर्धन्य विद्वान शामिल हुए। यह सम्मेलन पूरे विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करेगा| इस सम्मेलन के तीसरे संस्करण के आयोजन से यह सिद्ध होता है कि रूस और यूरेशिया के समस्त देशों में हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति गहरा प्रेम और उत्साह विद्यमान है|

अंत में, मैं रूस में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगे सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं को उनके सद्प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप सभी इसी तरह हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति समर्पित प्रयासों को जारी रखेंगे ताकि आप अपने उद्देश्य में सफल हो सकें और मुझे आशा है कि हिन्दी एक न एक दिन विश्व भाषा ज़रूर बनेगी।

डॉ. शुभ नारायण सिंह
पिलुगिना, मॉस्को
+79653486132

अनुदित अल्प वृत्त चलचित्र या डॉक्यूमेंटरी फ़िल्में: अनुवाद की समस्याएँ

डॉ. इंदिरा गाज़िएवा

आधुनिक दुनिया के यथार्थता जैसे भूमंडलीकरण, सांस्कृतिक एकीकरण, जन संचार यानी मास कम्युनिकेशन के क्षेत्र में डिजिटल प्रौद्योगिकी के तेजी विकास अनुवादकों के सामने नई चुनौतियाँ तथा संभावना पेश की जाती है। एक समस्या ही ऐसा है कि विभिन्न प्रकार के फ़िल्मों का अनुवाद का गहरा अध्ययन किया जाना है और विद्यार्थियों को इस प्रकार का अनुवाद करने को सिखाना भी चाहिए।

हिंदी अध्ययन अध्यापन के कार्य में मातृभाषा से विदेशी भाषा की अनुदित कार्य आम तौर पर अंतरभाषीय तथा अंतरसांस्कृतिक संचार साधन की प्रक्रिया को समझा जाता है। आज रूसी फ़िल्म मार्केट